भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष 11, अंक-10 मंगलवार, 25 अक्टू. 88	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी मानद् सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

दीवाली : सच्ची दीवाली : रोज दीवाली !!

दीवाली.....दीपों का त्यौहार.....हर्ष उल्लास का दिन अर्थात् अधर्म पर धर्म की विजय, असत्य पर सत्य की जीत का महामंगलकारी दिन....इतिहास बताता है कि अमावस्या की घोर अंधेरी रात्रि में भगवान राम रावण पर विजय पाकर चौदह वर्ष के पश्चात् अपनी अयोध्या में लौटे थे। तब प्रजा ने अपने प्रिय राजा के स्वागत में उस काली रात को भी अपने घरों में खुशी के दीप जला-जलाकर चांदनी रात बना दिया था। परन्तु उस समय की दीवाली व आज की दीवाली में खूब अन्तर है !

सही दृष्टि से देखें तो आज जीवमात्र के जीवन में चाहे व्यवहार के कारण, चाहे मन की बीमारी के कारण, चाहे शारीरिक रोगों के कारण सदैव अमावस्या की काली रात ही है। जग्रत में कोई आज यह नहीं कह सकता कि मैं पूर्णतया सुखी हूँ। हरेक की आत्मा का दीप बुझा हुआ ही है। 'मन का रावण' जीव पर हावी होकर उसे हराना चाहता है और जीव की इतनी ताकत नहीं कि वह अपने आपको स्वयं प्रकाशित कर सके। और जिसकी आत्मा का दीपक बुझने को है वह बाहर के दीप जलाकर क्या आनन्द कर पायेगा? जबकि आत्मा की रोशनी ही सही रोशनी है। तो सर्वप्रथम हम सब अपनी आत्मा के दीप प्रगटाने का सच्चा पवित्र साधन ढूंढे....अपने मन के रावण पर विजय दिलाने वाले व इन्द्रियां-अंतःकरण के चंचल प्रवाह को सही राह पर ले जाने वाले समर्थ सारथी को ढूंढे.....भंवर में डगमगाती हमारी नाव का कुशल खिवैया ढूंढे.....और यह सब प्रभुधारक सच्चे संत के दर्शन, सेवा, समागम, संबंध द्वारा ही संभव है ! वही हमारी आत्मा के दीप जलाकर देह होते हुए अक्षरधाम के वास्तविक सुख, शान्ति, आनन्द का भोक्ता बना सकता है। 'नान्य पन्थाः....' तो– आइये, हम सब मिलकर सच्चे संत को अपना सर्वस्व सौंपकर दिव्यभाव व अहोभाव के दीप प्रगटायें व उनके संबंध से हर पल 'सच्ची दीवाली' मनाकर स्वयं को धन्य बनायें.....

हम सब तो खूब भाग्यशाली हैं कि ऐसे संत– पारस से पारस करनेवाले गुणातीत स्वरूप हमें

बिना कोई साधन किए मिल गये। और आज तो स्वर्ण अवसर है कि वे गुणातीत स्वरूप हमें पूर्ण बनाने 'गरजु' बने हैं। जीवों के अनेक जन्मों के अंधकार को दूर करने, बन्धनों से मुक्त कराने अपना निज संबंध देकर लाड़ लड़ाते-लड़ाते मोक्ष के द्वार पर ले जाने वाले ऐसे संत कलियुग में कहां मिलेंगे? प.पू. काकाजी महाराज की अमृतवाणी में हम सभी ने कई बार सुना है—**'जाओ, तुम्हारा अब तक का सब माफ.....अरे....इस पल—इस सेकण्ड तक का सब माफ, परन्तु अब फिर नया प्रारब्ध मत खड़ा करना।'** कोई समर्थ सारथी, जिसे भगवान वश हो वही ये वचन दृढ़तापूर्वक बोल सकता है।

हम सब दृढ़ निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास, सुहृद्भाव, सुरुचि रखकर सत्पुरुष के प्रति वफादार रहें....यही एकमात्र हमारे प्रभु प.पू. काकाजी की चाहना थी। प्राप्ति की मस्ती में रहकर मिल-जुलकर—आनन्द किल्लोल करेंगे.....अखंड इनके चरित्रों व महिमायुक्त विचारों में खोये रहकर जीवन बितायेंगे भजन करते-करते हरेक क्रिया करेंगे तो वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिन की प्रत्येक सैकण्ड दीवाली का ही आनन्द प्राप्त कर सकेंगे और वही संत का दृढ़ आसरा, उसके वचन में विश्वास रखा माना जायेगा।

आज भी प.पू. काकाजी हमारे लिये परोक्ष नहीं हुए। अभी भी वह पल-पल हमें दिव्य चक्षुओं से निहार रहे हैं कि मेरे बच्चे इस भव्य प्राप्ति को समझे या नहीं? अक्षरधाम का सुख, शांति, आनन्द जो मैं इन्हें देना चाहता था उसके भोक्ता बने या नहीं? पृथ्वी पर मानवस्वरूप में मेरे प्रगट होने का रहस्य समझे या नहीं? हम सब उनका ऋण तो नहीं चुका पायेंगे, पर उनके अभिप्राय को समझकर प्रत्यक्ष स्वरूपों को योजना में साथ देने का प्रयत्न मात्र भी हम करेंगे तो वह करुणासिंधु मूर्ति इसे भी हमारी भक्ति मानकर हमें न्याल कर देगी। तो अब मन, बुद्धि, चित्त, वासना, तृष्णा की जड़ बेड़ियों को काटकर कर्ता-हर्ता, नियंता, सर्वोपरि, साकार, प्रगट, दिव्य, निर्दोष पवित्र प्रभुसत्ता को अगर हम दिल की सच्चाई स्वीकार करेंगे तो गुणातीत स्वरूप हमारे जीवन में हर दिन 'दीवाली' का आनन्द प्रगटा देंगे....हम सब आपकी करुणा झेलने के पात्र बने—हे प्रत्यक्ष प्रभु ! ऐसा अनुग्रह आप करना।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी

संवत् 187 की साल में दादाखाचर के पिताश्री एभलखाचर धाम में गये। इस प्रसंग पर श्रीजी महाराज ने साधुओं तथा ब्राह्मणों को खूब खिलाया। मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी तो महाराज की मूर्ति के सामने ही एकटक देखते रहते। इससे महाराज जितना उन्हें पीरसते उतना वह खा जाते। रोज-जलेबी-साटा (बालुशाही) की रसोई चलती अत्यधिक चीनी खाने से स्वामिश्री का शरीर पीला पड़ गया। व जो भी खाना खाते वह उन्हें पचता नहीं केवल दूध ही पचता था। सो महाराज ने हरिभक्तों को आज्ञा करी कि 'इस साधु को केवल दूध ही देना।'

इस समय स्वामिश्री सद्. कृपानन्दस्वामी के मंडल में थे। सद्. कृपानन्दस्वामी के साथ

स्वामिश्री नाघेर देश में उना-देलवाड़ा गाँव में विचरण करने निकले। उना के हरिभक्तों ने आग्रहपूर्वक स्वामिश्री को नारियल व दूध खिलाया। स्वामिश्री को तो देह का अत्यधिक अनादर था। इसलिये स्वयं के स्वास्थ्य की ज्यादा चिन्ता नहीं करते थे। सो केवल नारियल के ऊपर ही देह का निर्वाह करने से स्वामिश्री का शरीर और अधिक पीला हो गया व देह में शक्ति कुछ रही नहीं। बाद में स्वामिश्री 'कोवैया' गांव पधारे। वहां दक्षिण की ओर सद्. आत्मानंदस्वामी की देरी के पास एक बावड़ी है उसमें नहाकर स्वामिश्री देरी के पास बैठे थे। इतने में बालयोगी वैरागी के वेश में श्रीजी महाराज ने दर्शन दिये और कहा–''तुम ऐसे रोगी कैसे बन गये हो? यह तुम्हारा पेट सांप के पेट की तरह चमक रहा है, जिससे लगता है कि हरिभक्तों ने तुम्हें नारियल व दूध बहुत खिलाया है। ठीक है, तुम्हें तो तुम्हारी देह नहीं संभालनी; पर हमें तुम्हारी देह संभालनी है।'' इतना कहकर महाराज अदृश्य हो गये।

स्वामिश्री को लगा कि मैं दूध पीऊं वह महाराज को पसंद नहीं। उन्होंने उसी दिन से दूध का जीवन भर के लिये त्याग कर दिया। भक्त के घर भी जाते तो वहां बाजरे का रोटला व छाछ पीते। स्वामिश्री महाराज की मर्जी पर–उनके आंख के इशारे मात्र पर चलने कैसे तैयार रहते.....इसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

फिर सद्. कृपानन्दस्वामी को समाचार मिला कि सभी संतमंडलों को महाराज ने गढ़डा बुलाया है। उन्होंने गढ़डा जाने का प्रोग्राम बना दिया।

गढ़पुर में जो भी संतमंडल आते उन्हें बाजरे का रोटले व उड़द की दाल खिलाने महाराज ने निश्चित किया था। दादाखाचर के दरबार से बाजरे के रोटले बनकर आते थे व संत उड़द की दाल बना लेते। महाराज नीम के पेड़ के नीचे ढोलिया रखकर बिराजते। कोई भी साधु आते दिखाई पड़ते तो महाराज जोर से बोलते कि 'अरे साधु आये' ऐसी अलौकिक लीला करते। इतने में सद्. कृपानन्द स्वामी का मंडल आ पहुँचा। महाराज ने सारे मंडल को खाना खिलाया परन्तु स्वामिश्री तो अशक्ति के कारण धीरे-धीरे चलते देर से पहुँचे। स्वामिश्री को आते देखकर महाराज एकदम उठे और दो बार जोर से बोले 'साधु आया–साधु आया'। एसे दो बार बोले फिर कहा : 'लाओ, बाजरे की रोटली और दाल साधु को खिलायें।' इतने में दरबार में से लाडुबा ने कहलवाया कि 'महाराज रोटला तो नहीं है और वैष्णवानंदस्वामी के पास थोड़ी दाल बची है।' यह सुनकर महाराज ने कहा : ''चाहे कैसे भी करो पर इस साधु को तो खिलाना ही है, सो दो रोटला बना कर लाओ।'' और वैष्णवानंदस्वामी की दाल में थोड़ा पानी व खूब सारी मिर्च डालकर उबालकर लाने को कहा। महाराज की आज्ञानुसार रोटला व दाल आई तो महाराज ने स्वामिश्री के पत्तर में एक रोटला पीरसा व एक कड़छी दाल पीरस कर दी। दाल खूब तीखी होने के कारण स्वामिश्री का खाते-खाते आंख व नाक से पानी निकलने लगा। परन्तु महाराज की दी हुई प्रसादी खा ही लेनी चाहिये यूं सोचकर के खाने लगे। थोड़ा खत्म होने आया तो दुबारा महाराज ने आधा रोटला व दाल पत्तर में डाली और मिर्चों की चटनी भी पत्तर में डाली। स्वामिश्री तो महाराज की ओर एकटक देखते रहे कि आज महाराज ने क्या सोच रखा है? महाराज आज क्या लीला कर रहे है वह उनकी समझ में नहीं आया। स्वामिश्री को इस प्रकार अपने सामने देखते देखकर महाराज ने

कहा : 'साधुराम खाओ, क्या देख रहे हो? साधु तो शूरवीर ही होता है।' यह सुनकर महाराज द्वारा पीरसा हुआ सारा खाना स्वामिश्री खा गये !

परन्तु मिर्च खूब अधिक खाने से स्वामिश्री के सारे शरीर में जलन होनी शुरु हो गई। इतनी अधिक जलन हुई कि सहा ही नहीं जाये। उससे स्वामिश्री परेशान हो गये और घेला नदी में नहाने चले गये। बाद में दस्त भी लग गये। तो स्वामिश्री बार-बार शौच जाते और वहां नदी पर नहाकर पास में ही सो जाते। तीन दिन तक यूं चलता रहा। परन्तु तीन दिन के बाद तो स्वामिश्री के शरीर से रोगमात्र निकल गया ! चौथे दिन स्वामिश्री नहाकर महाराज के दर्शन करने आये। स्वामिश्री को देखकर महाराज ने हंसते-हंसते कहाः 'साधुराम ! रेच ठीक लगा न? कौवेया गांव की बावड़ी के पास हमने तुम्हें नहीं कहा था कि रोग क्यों रखते हो? पर तुम तो रोग लेकर ही आये ! तो फिर दर्शन का सुख कैसे आये? औल इससे भी अधिक तुम्हारा लाभ भी दूसरों को कैसे मिले? सो हमने तुम्हें यह दवाई खिलाई थी।' (मिर्चों वाली दाल !) स्वामिश्री महाराज के कहने का रहस्य समझ गए।

महाराज व स्वामिश्री का संबंध कैसा अनोखा व प्रगाढ़ होगा? हमारी कल्पना से परे का था.....बस यही शब्द निकल पड़ते हैं गुरु भी अद्वितीय व शिष्य भी अद्वितीय !!!! **–क्रमशः**

ब्रह्मप्रवाह

सब सत्संगियों के प्रति.....

नये वर्ष के शुभ आशीर्वाद स्वामिश्रीजी के चरणों में रहकर प्रार्थना करते हुए सबको भेजे हैं। तो पूरे वर्ष अखंड आनन्द में रहकर–प्रगट स्वरूप की प्राप्ति का लाभ–महिमा-जीव मे उतार कर दिव्य भाव की दृढ़ता करते जाना। गुरुवर्य योगीजी महाराज ने अतिशय दया करके अक्षर पुरुषोत्तम का रहस्य-ज्ञान सामान्य जीव कोटि में डाल दिया है। तो बाहर का, अन्तर का व सत्संग का जगत ऐन मौके पर देशकाल के रूप में शायद परेशान कर जाये, पर साथ ही निजी संबंध से–निर्दोष बुद्धि रखने वाले को सदा ही सुखी कर दिये हैं। तो अब बल में रहना व जहां जैसी स्थिति मे रखे हों वह पू. स्वामिजी की ही मर्जी है यूं सहर्ष स्वीकार–सतत् अंतर्दृष्टि रखने वाले को सदा ही सुखी कर दिये है। तो अब बल में रहना व जहां जैसी स्थिति में रखे हों वह पू. स्वामिजी की ही मर्जी है यूँ सहर्ष स्वीकार–सतत् अंतर्दृष्टि करते करते हुए गद्‌गद् कंठ से प्रार्थना करते रहना। तो तत्काल गुरुजी सुनेंगे व एक या दूसरे रूप से–चाहे कहीं से भी या प्रगट की निष्ठा वाले में से भी जवाब दे देंगे। शान्ति बक्ष कर समाधान कर ही देंगे। इस लिए निश्चिन्तता से–निधड़क रूप से बहुत बड़ा अमूल्य खजाना परम चिंतामणि के रूप में बिना प्रयास प्राप्त हुआ है उसे गरीब बनकर नम्रभाव से संभाल कर दिव्य आनन्द देह होते हुए ही लेते रहने की आदत डालना। वही सर्वोत्तम भजन व परमपद पाने का अनुपम साधन सबको सुलभ बनो यही अभ्यर्थना। **–प.पू. काकाजी महाराज 1966**

ooo

सूचना : 1. दि. 09.11.88 बुधवार – दीपावली, लक्ष्मी पूजन
1. दि. 10.11.88 गुरुवार – अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, **अशोक विहार मन्दिर में अन्नकूटोत्सव–**

PUBLISHED By SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. (India) Tel. : 7128838, 7229327
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110 032